महासती द्वय स्मृति ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०१२०२५)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
सम्पादकीय
यत्किञ्चित्
अनुक्रमणिका
श्रद्धा सुमन--- १-८८
संदेश --- १
पावन प्रेरणा स्रोत --२
निर्धूम ज्योति --२
संदेश --३
गुणों की मधुर महक --- ४
समाज पर उपकार -- ४
ज्योति से ज्योति प्रज्वलित हो --- ५
शुभ संदेश --- ६
कमी हो गई -- ६
श्रद्धांजलि--- ७
आशीर्वचन -- ७
उनकी स्मृति अमर है --८
सरल स्वभावी महासतीजी ---८
संदेश --- ९
श्रमणी समुदाय की क्षति -- ९
भावना -- १०
विशिष्ट व्यक्तित्व की धनी --- १०
समर्पित साधिका --- ११
इच्छा अधूरी रह गई --१२
शत् शत् श्रद्धांजलि --१२
शुभकामना -- १४
हार्दिक श्रदधांजलि --- १४
श्रद्धांजलि--- १५
अपूरणी क्षति --- १५
श्रद्धांजलि पुष्प -- १७
मुझे स्मति है --१८
अर्पित है भावांजली -- १९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांति एवं भव्यता की प्रतिमूर्ति -- २०
पलकों में आहट ---२१
गुण स्मृति --२१
प्रतिभा की धनी श्रमणी श्री चम्पाजी म.सा. --- २३
भावभीनी श्रद्धांजलि -- २४
हृदय मंदिर की आराध्या -- २५
जनजीवन का आधार --- २७
श्रद्धांजलि-- २९
श्रमण संघ की दो महान विभूतियाँ -- ३०
शत् शत् श्रद्धासुमन ---३१
आध्यात्मिक ज्योति की दिव्य मशाले -- ३२
गुणरत्नों से आप्लावित जीवन --- ३३
श्रद्धा सुमन --- ३४
मेरा स्वप्न अधूरा रह गया -- ३५
सरलता की प्रतिमूर्ति -- ३६
श्रद्धांजलि-- ३८
शोक एवं श्रद्धांजलि प्रस्ताव -- ३८
शोक प्रस्ताव -- ३९
आमेट में शोक सभा -- ३९
शोक प्रस्ताव -- ४०
हार्दिक श्रद्धांजलि -- ४०
महासती श्री कानकंवरजी म. को श्रद्धांजलि --- ४१
अपूरणीय क्षति -- ४२
उनके बताये मार्ग का अनुसरण करें --- ४३
शिवपुर में शोकसभा -- ४४
हार्दिक श्रद्धांजलि -- ४४
श्रद्धासुमन -- ४५
उपकारी गुरुवर्या --- ४५
हार्दिक श्रद्धांजलि -- ४६
दर्शन की इच्छा अधूरी रह गई --- ४७
शांत स्वभावी महासतीजी --- ४७
स्मृति ही शेष है --- ४८
हार्दिक श्रद्धांजलि -- ४९
तेजस्वी साध्वी रत्ना -- ५०
अनमोल हीरा --- ५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सरलता की प्रतिमूर्ति -- ५१
अविस्मरणीय जीवन-- ५१
सागरसम गम्भीर -- ५२
अनमोल रत्न -- ५३
श्रद्धा के दो पुष्प -- ५३
श्रद्धांजलि-- ५५
हार्दिक श्रद्धांजलि -- ५६
श्रद्धा सुमनः महासती द्वय के चरणों में -- ६२
शोक पंचक -- ६६
श्रद्धासुमन -- ६६
श्रद्धा के सुमन भेंट चढायें -- ६८
श्रद्धा के दो फूल -- ६९
महासती श्री कनकंवरजी म. -- ६९
महासती श्री चम्पाकुंवरजी म. -- ७१
कान त्याग संसार -- ७३
शोक पंचक -- ७४
श्रद्धा पुष्पांजलि भेट -- ७४
नारी का असली रूपः महावीर की दृष्टि में -- ७६
स्मृति के लिए -- ७८
मरुधरा की महानसती -- ७९
घणी दुःख भरी बात -- ८०
श्रद्धा सुमन --८१
श्रद्धा पुष्प --८१
धीरज कौन बंधाये -- ८२
चंपा महासइ-संइपणमामि -- ८२
चम्पा दशक -- ८४
धन्य धन्य हे महसाती -- ८५
पू. श्री कानकुंवरजी म. श्रद्धांजलि-- ८६
बिखरे शूल हरो-- ८७
किया जीवों का उद्धार -- ८८
गुरु परम्परा -- १-४६
स्थानकवासी जैन आचार्य – परम्परा -- १
स्वामी जी श्री जोरावमल जी महाराज -- २०
मुनिश्री हजारीमल जी महाराज -- २३
समता योगी स्वामी श्री ब्रजलाल जी म. -- २८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

युवाचार्य श्री मधुकर मुनि-जीवन दर्शन ---३१
अद्भुत देह और मन के सौन्दर्य की प्रतिमा --- ४२
महासती द्वय – जीवन दर्शन -- १-७६
महासती श्री कानकुंवर जी म. – जीवन दर्शन --- १
पाँच कहानियाँ -- २५
श्री कानशतक --३१
आँखों देखा यथार्थ -- ३५
महासती श्री चम्पाकुंवर जी म. – जीवन दर्शन --- ३८
जो पाया उनसे पाया -- ७३
महाविदुषी श्रमणी --- ७५
नारी-मूल्य और महत्व -- १-६०
विश्व चेतना में नारी का गौरव – युवाचार्य डॉ. शिवमुनि -------------------------------------- १
विश्व शांति के संदर्भ में नारी की भूमिका – मुनि श्री नेमिचन्द्रजी ------------------------------ ६
अतीत की प्रमुख साध्वियाँ – श्री रमेश मुनि --- १५
श्रमण संस्कृति में नारी-एक मूल्यांकन – श्री रमेश मुनि -- २०
महिमामयी नारी – महासती श्री उमरावकुंवरजी -- २७
श्रमणी तीर्थ का जैन धर्म की प्रभावना में अवदान – साध्वी डॉ. दिव्यप्रभाश्रीजी --------------- ३३
जैन आगम साहित्य में नारी का स्वरूप – महासती श्री उदितप्रभाश्रीजी ----------------------- ३९
साध्वी जीवन-एक चिंतन – दीक्षित डॉ. सुशील जैन -- ४३
अंध विश्वास निवारण में नारी की भूमिका – श्रीमती माया जैन ------------------------------ ४७
हिन्दी काव्य के विकास में श्रमणियों का योगदान – श्री कन्हैयालाल लोढ़ा ------------------- ५१
जिन शासन में श्रमणियों की भूमिका – डॉ. कुसुमलता जैन---------------------------------- ५७
श्रमणी परम्परा को कुचेरा की देन – साध्वी बसंत कुंवर ------------------------------------- ६०
जैन परम्परा के विविध आयाम --- १-२५६
कर्मसिद्धांत की उपयोगिता – श्री देवेन्द्र मुनि --- १
सम्यक् दर्शन – श्री सौभाग्य मुनि -- १६
समतायोग का अंतः दर्शन – श्री रतन मुनि -- १९
जिन और जिन शासन माहात्म्य – श्री सुकनमल मुनि -- २२
स्वाध्याय-एक अनुचिंतन – डॉ. सुव्रत मुनि --- ३०
पुद्गल-एक पर्यवेक्षण – श्री रमेश मुनि --- ३४
जैन साधना और ध्यान – डॉ. सागरमल जैन -- ५३
जैन परम्परा में स्वाध्याय तप – डॉ. दामोदर शास्त्री --- ८२
श्रमण संस्कृति – एक परिशीलन – मुनि डॉ. राजेन्द्रकुमार ------------------------------------ ९८
जैन मंत्र साधना पद्धति – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी -- १०४
परिस्थितिकी और जैन चिंतन – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी-- ११०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन दर्शन में जीव अस्तित्व की वैज्ञानिकता – डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया ------------------ ११४
जैन धर्म सर्वोदयतीर्थ है – डॉ. भागचन्द्र -- ११७
जैन मंत्र साहित्य-एक परिचय – डॉ. संजीव प्रचण्डिया -------------------------------------- १२७
समतायोग-एक अनुचिंतन – श्री जशकरण डागा --१३१
स्वाध्याय का सरल स्वाध्याय – श्री लक्ष्मीचंदजी -- १४३
वर्तमान संदर्भ में जैन गणित की उपादेयता - डॉ. परमेश्वर झा ------------------------------ १४८
यंत्र रचना प्रक्रिया और प्रभाव – श्री सतीश मुनि -- १५४
जैन दर्शन सम्मत मुक्त मुक्ति-स्वरूप साधन – पं. देवेन्द्र कुमार जैन ------------------------ १५८
जैन धर्म में व्रत – डॉ. ए. बी. शिवाजी --- १६८
जैन दर्शन में ज्ञान का स्वरूप – डॉ. कालिदास जोशी --------------------------------------- १७४
आचारांग और कबीर दर्शन – डॉ. निजाम उद्दीन --- १७६
स्वप्न मनोविज्ञान और मानव अस्तित्व – डॉ. वीरेन्द्र सिंह ------------------------------------१८१
समन्वय का मार्ग स्यादवाद – डॉ. उदयचन्द्र जैन -- १८४
नीति तत्व और जैन आगम – श्री सुभाव मुनि -- १८९
अहिंसा की परिधि में पर्यावरण संतुलन – डॉ. पुष्पलता जैन -------------------------------- १९६
जैन आचार-पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता – श्री राजीव प्रचंडिया ----------------------------- २०२
शब्द विचार – डॉ. धन्नालाल जैन -- २०७
जैन दर्शन में प्रयुक्त कतिपय दार्शनिक शब्द – डॉ. अलका प्रचण्डिया ------------------------ २१०
सप्तधातु और आधुनिक विज्ञान – डॉ. सज्जनकुमार -- २१३
मानवी मूल्य और जैनधर्म – डॉ. शारदास्वरूप --- २२०
हेमचन्द्राचार्य और उनका सिद्ध हेम व्याकरण – प्रो. अरूण जोशी ---------------------------- २२४
बुद्धि का वैभव – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया --- २२९
जैन धर्म में तप का स्वरूप – मुनि श्री अमृतचन्द्रजी --------------------------------------- २३४
जैन धर्म में तप का महत्व – डॉ. चांदमल बावेल --- २३७
जैनमत में पुनर्जन्म – श्री प्रह्लादनारायण वाजपेयी --- २४४
वर्तमान संदर्भ में शाकाहार की उपादेयता – श्रीमति कीरण सिरोलिया ----------------------- २४७
जैन धर्म में तप – सौ. सुनीला नाहर --- २५०
कुचेरा और जैन धर्म – श्री जतनराज मेहात --- २५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org